पहली सती

विजी श्रीनिवासन की कहानी पर आधारित

मेरा प्यारा दामाद आज नहीं रहा। उसका जवान सुंदर शरीर आज मृत पड़ा है। मौत में भी वो कितना सुंदर लग रहा है। गोरा रंग, तीखी नाक, काले घुंघराले बाल, माथे पर हल्दी का लेप। मैंने कभी पहले उसे इतना ध्यान से नहीं देखा था। आखिर उसकी सास थी मैं और वो भी विधवा।

मोटी सफेद साड़ी पहनना, जमीन पर सोना और रूखा-सूखा खाना यही मेरा भाग्य है। हर महीने मेरे सिर के बाल काट दिए जाते हैं। कभी मैं सुंदर थी। बहुत सुंदर, लेकिन अब तो लगता है कि वो किसी और जन्म में था। सुंदर रेशमी कपड़े, जेवर, माथे पर सिंदूर, चेहरे पर संतोष भरी हंसी सब खत्म हो चुके हैं। मैं विधवा हूं। लोग मुझे अभागन कहते हैं। मुझे देख कर मुंह फेर लेते हैं। आज मेरी बेटी रूपा भी विधवा हो गई है।

पास के कमरे से फुसफुसाहट का स्वर सुनाई देता है। घर के मर्द बात कर रहे हैं। रूपा के देवर, जेठ और घर का पुरोहित। सब ताक़तवर मर्द। जो वे लोग चाहते हैं वही होता है।

"क्यों न रूपा को उसके पति की चिता पर जला दिया जाए?"

मेरे कान खड़े हो गए।

"कितना नाम और इज्ज़त मिलेगी हमारी जाति को।"

"फिर रूपा अभी जवान है, सुंदर है। वह पुरुष का साथ चाहेगी। अगर पर-पुरुष से संबंध हो गया तो हमारी नाक कट जाएगी।" उसके जेठ ने कहा।

मेरे दामाद की देह अभी तक पूरी तरह ठंडी नहीं पड़ी है। रूपा रो रही है। हिचकियां ले लेकर रो रही है। अब तक अपनी लाल ज़री की साड़ी पहने हुए। उसकी कलाइयों में कांच और सोने की चूड़ियां झलमल कर रही हैं। कल लगाई हुई मेंहदी आज भी हथेलियों पर चमक रही है। दिए की रोशनी में उसका आंसुओं से धुला चेहरा दमक रहा है।

फुसफुसाहट फिर से सुनाई पड़ती है। मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

"रूपा मर गई तो तुम्हें उसकी जायदाद भी मिल जाएगी। ज़िंदा रही तो ज़िंदगी भर उसे खिलाना पड़ेगा। पता नहीं कब तक जिए, नब्बे-सौ साल।"

"ठीक कहते हो। लेकिन इतनी सुंदर औरत को जला दें? हम भी तो उसका आनंद ले सकते हैं। मैंने कई बार उसके पति के भाग्य से ईर्ष्या की थी।"

"मूर्ख न बनो। तुम्हारी पत्नी बहुत तेज है। फिर क्षणिक आनंद के लिए बड़े फायदों को मत छोड़ो।" यह आवाज पुरोहित की थी।

"हम यहां एक बड़ा मंदिर बनवाएंगे। हर वर्ष लाखों रुपयों का चढ़ावा आएगा। मेरी और तुम्हारी कई पीढ़िया बैठ कर खाएंगी।"

"परंतु तुम यह सब करोगे कैसे?" किसी ने पूछा।

"मैं कहूंगा कि मुझे सपने में भगवान ने यह

आदेश दिया है या फिर मैं कहूंगा कि संस्कृत के धार्मिक ग्रंथों में ऐसा लिखा है।''

''हां, यह ठीक है। संस्कृत कोई नहीं जानता।''

''हम उसे कहेंगे कि तुम स्वर्ग जाओगी अपने पति के साथ। तुम सदा सुहागन रहोगी। वैसे भी अपनी मां का विधवा जीवन देख कर वो जीना भी नहीं चाहेगी। अभी वह दुख में डूबी हुई है। हमें मौके का फायदा उठाना चाहिए।''

''लेकिन बाकी औरतें मना करेंगी?''

''अरे नहीं, वे नादान और अंधविश्वासी हैं। हां, उसकी मां ज़रूर गड़बड़ करेगी। लेकिन उसका इलाज भी मेरे पास है। मैं उसके चरित्र पर दोष लगाने की धमकी दे दूंगा। बस, और कोई रुकावट नहीं है।''

सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा इन पुरुषों ने तय किया था। पुरोहित ने संस्कृत के मंत्र पढ़े। रूपा को नशे की दवा दे दी गई और कहा गया कि उस पर 'सत' आ गया है। उसे दुल्हन की तरह सज़ा कर अर्थी के साथ ले गए। खूब लोग इकट्ठा हो गए। उसकी जयजयकार की। किसी ने यह सब रोका नहीं। मैंने भी नहीं।

वो अपने पति के साथ चिता पर बैठ गई। उसकी नज़र मुझसे मिली। उसने मेरी तरफ़ हाथ फैलाए। लेकिन लपटों ने उसे घेर लिया। सबने कहा जाने से पहले उसने आशीर्वाद दिया था। लेकिन मैं जानती हूं वह आशीर्वाद नहीं था।

वो एक सवाल था मुझसे। मैंने अपनी बच्ची को धोखा दिया। मैंने आने वाली पीढ़ियों की औरतों के साथ धोखा किया।

□